तीतुस कैँ पौलुसक पत्र

1 हम, पौलुस, जे परमेश्वरक दास
आ यीशु मसीहक एक मसीह-
दूत छी, ई पत्र लिखि रहल छी। हमरा
एहि लेल पठाओल गेल जे परमेश्वरक
चुनल लोक सभ कैँ सही बात पर
विश्वास करऽ मे मजगूत करी आ
सत्यक ओ ज्ञान सिखाबी जे भक्तिक
अनुसार आचरण-व्यवहार उत्पन्न करैत
अछि। 2ओ विश्वास आ ज्ञान अनन्त
जीवन पयबाक आशाक आधार अछि।
परमेश्वर, जे कहियो झूठ नहि बजैत
छथि, से संसारक सृष्टि सँ पहिनहि ई
अनन्त जीवन देबाक वचन देने छथि,
3और आब निर्धारित समय पर ओ अपन
वचन सुसमाचारक प्रचार द्वारा प्रगट कऽ
देलनि। ई प्रचारक काज अपना सभक
उद्धारकर्ता परमेश्वरक आज्ञा द्वारा हमरा
सौंपि देल गेल अछि। 4हम ई पत्र हमरा
संग एके विश्वास मे सहभागिताक दृष्टि
सँ अपन असली पुत्र तीतुस कैँ लिखि
रहल छी।

पिता परमेश्वर आ अपना सभक
उद्धारकर्ता मसीह यीशु अहाँ पर कृपा
करथि आ अहाँ कैँ शान्ति देथि।

मण्डलीक देख-रेख कयनिहार सभक योग्यता

5 हम अहाँ कैँ क्रेत द्वीप मे एहि लेल छोड़ि
अयलहुँ जे ओतुक्का बाँकी बात सभ कैँ
सुधारू आ जहिना हम अहाँ कैँ सिखौने
छलहुँ तहिना प्रत्येक नगर मे मण्डलीक
देख-रेख कयनिहार सभ कैँ नियुक्त करू।
6ई आवश्यक अछि जे मण्डलीक देख-रेख
कयनिहार निष्कलंक होथि, हुनका एकेटा
स्त्री होनि, हुनकर बाल-बच्चा प्रभु पर
विश्वास करैत होअय आ ओकरा सभ पर
बदमास वा बेकहल होयबाक आरोप नहि
लगाओल जा सकय। 7किएक तँ जखन
परमेश्वरक काज हुनका हाथ मे सौंपल गेल
अछि तँ मण्डलीक जिम्मेवार कैँ निष्कलंक
होयब आवश्यक अछि। ओ जिद्दी, क्रोधी,
शराबी, मारा-मारी कयनिहार आ अनुचित
लाभ कमयबाक इच्छुक नहि होथि।
8बल्कि ओ अतिथि-सत्कार कयनिहार,
नीक बात सँ प्रेम कयनिहार, विचारवान,
न्यायी, पवित्र चरित्रक आ संयमी होथि।
9ओ विश्वसनीय वचनक ताहि रूप पर
दृढ़ रहथि जाहि रूप मे ओ वचन हुनका

Message of Life (The New Testament - Maithili) © 2010 The Bible Society of India and WBT

सिखाओल गेलनि, जाहि सँ ओ सही सिद्धान्तक अनुसार लोक कैं शिक्षा दऽ सकथि आ तकर विरोधी सभ कैं निरुत्तर कऽ सकथि।

सत्य कैं बिगाड़ऽ वला सभक सम्बन्ध मे कड़ा चेतावनी

10 कारण, बहुत एहन लोक अछि जे बेकहल, बक-बक कयनिहार आ धोखेबाज अछि, विशेष रूप सँ खतना प्रथाक कट्टर समर्थक यहूदी सभ मे। **11** एकरा सभक मुँह बन्द कयनाइ आवश्यक अछि, किएक तँ एहन लोक नीच लक्ष्य सँ अपने लाभक लेल अनुचित बात सभ सिखा कऽ घरक-घर बिगाड़ि रहल अछि। **12** क्रेत वासी सभक अपनो एक भविष्यवक्ता कहने छथि जे, “क्रेत वासी सभ हरदम झूठ बजैत अछि, मरखाह जानबर आ आलसी पेटाह अछि।” **13** ओकरा सभक विषय मे कहल ई गवाही सत्य अछि। एहि लेल अहाँ ओकरा सभ कैं कड़ा चेतावनी दिऔक जाहि सँ ओकरा सभक विश्वास सही शिक्षा पर आधारित भऽ जाइक, **14** आ ओ सभ यहूदी सभक मनगढ़न्त कथा-पिहानी पर और सत्य कैं अस्वीकार करऽ वला लोक सभक विभिन्न नियम सभ पर ध्यान नहि दिअय।

15 शुद्ध मोनक लोकक लेल सभ वस्तु शुद्ध अछि मुदा जे सभ भ्रष्ट भेल अछि आ प्रभु पर विश्वास नहि करैत अछि, तकरा सभक लेल कोनो वस्तु शुद्ध नहि, कारण ओकरा सभक मोन आ विवेक दूनू दुषित भऽ गेल छैक। **16** ओ सभ अपना कैं परमेश्वर कैं जननिहार तँ कहैत अछि, मुदा अपना व्यवहार द्वारा हुनका अस्वीकार करैत अछि। ओ सभ घृणित अछि, आज्ञा उल्लंघन कयनिहार अछि और कोनो प्रकारक नीक काज करबाक जोगरक नहि अछि।

सही आचरणक आधार सही शिक्षा

2 मुदा अहाँ सही शिक्षाक अनुकूल जे बात अछि सैह सिखाउ। **2** वृद्ध पुरुष सभ कैं सिखबिऔन जे ओ सभ संयमी, गम्भीर आ विचारवान होथि तथा सही विश्वास, प्रेम आ धैर्य मे स्थिर। **3** एही तरहेँ बुढ़ि स्त्रीगण सभ कैं सिखबिऔन जे हुनका सभक चालि-चलन प्रभुक श्रद्धा मानऽ वला लोकक अनुरूप होनि। ओ सभ दोसराक निन्दा-शिकायत नहि करथि आ शराबी नहि होथि, बल्कि नीक बात सिखौनिहारि होथि, **4** जाहि सँ ओ सभ जबान स्त्रीगण सभ कैं सिखा सकथि जे ओ सभ अपना पति आ बच्चा सभ सँ प्रेम करथि, **5** आ विचारशील, पवित्र, कुशल गृहणी आ दयालु होथि, और अपन पतिक अधीन रहथि जाहि सँ हुनका सभक व्यवहारक कारणेँ केओ परमेश्वरक वचनक निन्दा नहि करय।

6 तहिना युवक सभ कैं सेहो विचार-वान होयबाक लेल समझबिऔक-बुझबिऔक। **7** अहाँ स्वयं प्रत्येक बात मे नीक व्यवहार द्वारा नमूना बनू। अहाँ शुद्ध मोन सँ आ गम्भीरता सँ शिक्षा दिअ— **8** एहन सही सिद्धान्तक शिक्षा दिअ जकर आलोचना नहि कयल जा सकत जाहि सँ कोनो बातक विषय मे अपना सभक निन्दा करबाक अवसर नहि पयबाक कारणेँ विरोधी सभ लज्जित भऽ जाय।

9 गुलाम सभ कैं सिखबिऔक जे ओ सभ प्रत्येक बात मे अपन मालिकक अधीन रहय, मालिक कैं प्रसन्न राखय आ बिनु मुँह लगबैत अपन मालिकक आज्ञाक

Message of Life (The New Testament - Maithili) © 2010 The Bible Society of India and WBT

पालन करय, 10चोरी-चपाटी नहि करय,
बल्कि स्पष्ट सँ देखाबय जे ओ पूर्ण रूप
सँ इमानदार अछि जाहि सँ सभ बात मे ओ
सभ अपना सभक उद्धारकर्ता परमेश्वरक
शिक्षाक शोभा बढ़बय।

11 किएक तँ परमेश्वरक कृपा सभ
मनुष्यक उद्धारक लेल प्रगट भेल अछि।
12ई कृपा अपना सभ केँ ई सिखबैत अछि
जे अधर्म आ सांसारिक अभिलाषा सभ
केँ त्यागि कऽ एहि संसार मे विचारवान
भऽ कऽ और उचित व्यवहार कऽ कऽ
एहन जीवन व्यतीत करी जकरा सँ
परमेश्वर प्रसन्न होथि। 13कारण, अपना
सभ ओहि दिनक बाट तकैत छी जहिया
अपना सभक आनन्दपूर्ण आशा पूरा भऽ
जायत, अर्थात्, जहिया अपना सभक
महान् परमेश्वर आ उद्धारकर्ता, यीशु
मसीह, महिमाक संग प्रगट होयताह।
14ओ वैह छथि जे अपना केँ अर्पित कऽ
देलनि जाहि सँ ओ अपना सभ केँ सभ
प्रकारक दुष्कर्म सँ छुटकारा देबाक मोल
चुकबथि आ अपना सभ केँ शुद्ध कऽ
कऽ ओ अपना लेल एहन प्रजा बनबथि
जे हुनकर अपन निज लोक होनि और
नीक काज करबाक लेल सदत उत्सुक
रहनि।

15 एहि सभ बातक शिक्षा अहाँ दैत
रहू, पूरा अधिकारक संग लोक सभ केँ
सिखाउ और ओकरा सभ केँ सुधारू।
केओ अहाँ केँ तुच्छ नहि बुझय।

परमेश्वरक दया द्वारा उद्धार, उद्धारक फलस्वरूप नीक आचरण

3 मण्डलीक लोक केँ स्मरण करबैत
रहू जे ओ सभ शासक सभक
आ अधिकारी सभक अधीन रहथि,
आज्ञाकारी होथि, सभ तरहक नीक काज
करबाक लेल तत्पर रहथि, 2ककरो
बदनामी नहि करथि, झगड़ा नहि करथि,
विचारशील होथि आ सदिखन सभक संग
नम्र व्यवहार करथि।

3 किएक तँ अपनो सभ पहिने निर्बुद्धि,
आज्ञा उल्लंघन करऽ वला और भटकल
छलहुँ, आ विभिन्न प्रकारक शारीरिक
इच्छा आ भोग-विलासक अभिलाषा
सभक गुलाम छलहुँ। अपनो सभ दुष्टता
आ ईर्ष्या सँ भरल जीवन बितबैत
छलहुँ। अपना सभ सँ घृणा कयल
जाइत छल आ अपनो सभ एक-दोसर सँ
घृणा करैत छलहुँ। 4मुदा जखन अपना
सभक उद्धारकर्ता परमेश्वरक दया आ
प्रेम प्रगट भेल, 5तँ ओ अपना सभक
उद्धार कयलनि। ई उद्धार अपना सभक
अपन कयल कोनो धर्मक काज सभक
आधार पर नहि, बल्कि हुनकर दयाक
कारणेँ भेल। अर्थात्, परमेश्वर अपना
सभ केँ धो कऽ नव जन्म देलनि, अपन
पवित्र आत्मा द्वारा अपना सभ केँ नव
बनौलनि। 6ओ ओहि पवित्र आत्मा केँ
अपना सभक उद्धारकर्ता यीशु मसीहक
माध्यम सँ प्रशस्त मात्रा मे अपना सभ केँ
प्रदान कयलनि, 7जाहि सँ हुनकर कृपा
द्वारा धार्मिक ठहराओल जा कऽ अपना
सभ ओहि अनन्त जीवनक उत्तराधिकारी
होइ, जकर अपना सभ केँ आशा अछि।
8ई बात एकदम सत्य अछि आ हम
चाहैत छी जे अहाँ एहि बात सभ पर
जोर दी, जाहि सँ जे सभ परमेश्वर पर
विश्वास कयने छथि से सभ नीक काज
सभ मे लागल रहबाक लेल ध्यान देथि।
ई बात सभ अति उत्तम आ सभ लोकक
लेल कल्याणकारी अछि।

Message of Life (The New Testament - Maithili) © 2010 The Bible Society of India and WBT

9 मुदा निरर्थक वाद-विवाद, वंशावली
सम्बन्धी बात आ धर्म-नियम सम्बन्धी
झगड़ा और बतकटौअलि सभ सँ बँचू,
किएक तँ एहि सभ सँ कोनो लाभ नहि
अछि; ई सभ बेकार अछि। **10** जे केओ
अहाँ सभक बीच मे फूट कराबय तकरा
चेतावनी दिऔक। जँ दोसरो बेरक
चेतावनीक बाद नहि मानैत होअय तँ
ओकरा सँ कोनो सम्बन्ध नहि राखू,
11 ई जानि जे एहन व्यक्ति पथभ्रष्ट भऽ
गेल अछि आ पाप करिते रहैत अछि।
ओ स्वयं अपना कैं दोषी ठहरा लेने
अछि।

व्यक्तिगत आदेश आ आशीर्वाद

12 हम जखन अरतिमास वा तुखि-
कुस कैं अहाँक ओतऽ पठायब तँ
अहाँ निकुपुलिस नगर मे हमरा लग
जल्दी अयबाक प्रयत्न करब। हम
ओतहि जाड़क समय व्यतीत करबाक
निश्चय कयने छी। **13** जेनास वकील
आ अपुल्लोसक यात्राक लेल नीक सँ
प्रबन्ध करबाक कोशिश करू जाहि सँ
हुनका सभ कैं कोनो बातक कमी नहि
होनि। **14** अपना सभक लोक सभ कैं
सेहो नीक काज मे लागल रहनाइ सिखऽ
पड़तनि जाहि सँ ओ सभ वास्तविक
आवश्यकता सभक पूर्ति कऽ सकथि
आ निष्फल जीवन नहि बितबथि।

15 एहिठामक हमरा संगक सभ लोक
अहाँ कैं नमस्कार पठबैत छथि। हमरा
सभ सँ प्रेम करऽ वला ओहूठामक
विश्वासी सभ कैं हमर नमस्कार कहि
दिऔन।

अहाँ सभ गोटे पर परमेश्वरक कृपा
बनल रहय।

Message of Life (The New Testament - Maithili) © 2010 The Bible Society of India and WBT